

# बाल विवाह





# बाल विवाह

Bangani  
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language  
Community based Book

प्रकाशण:-  
NLCI  
बंगाणी मसी समिति समू

## दो बात

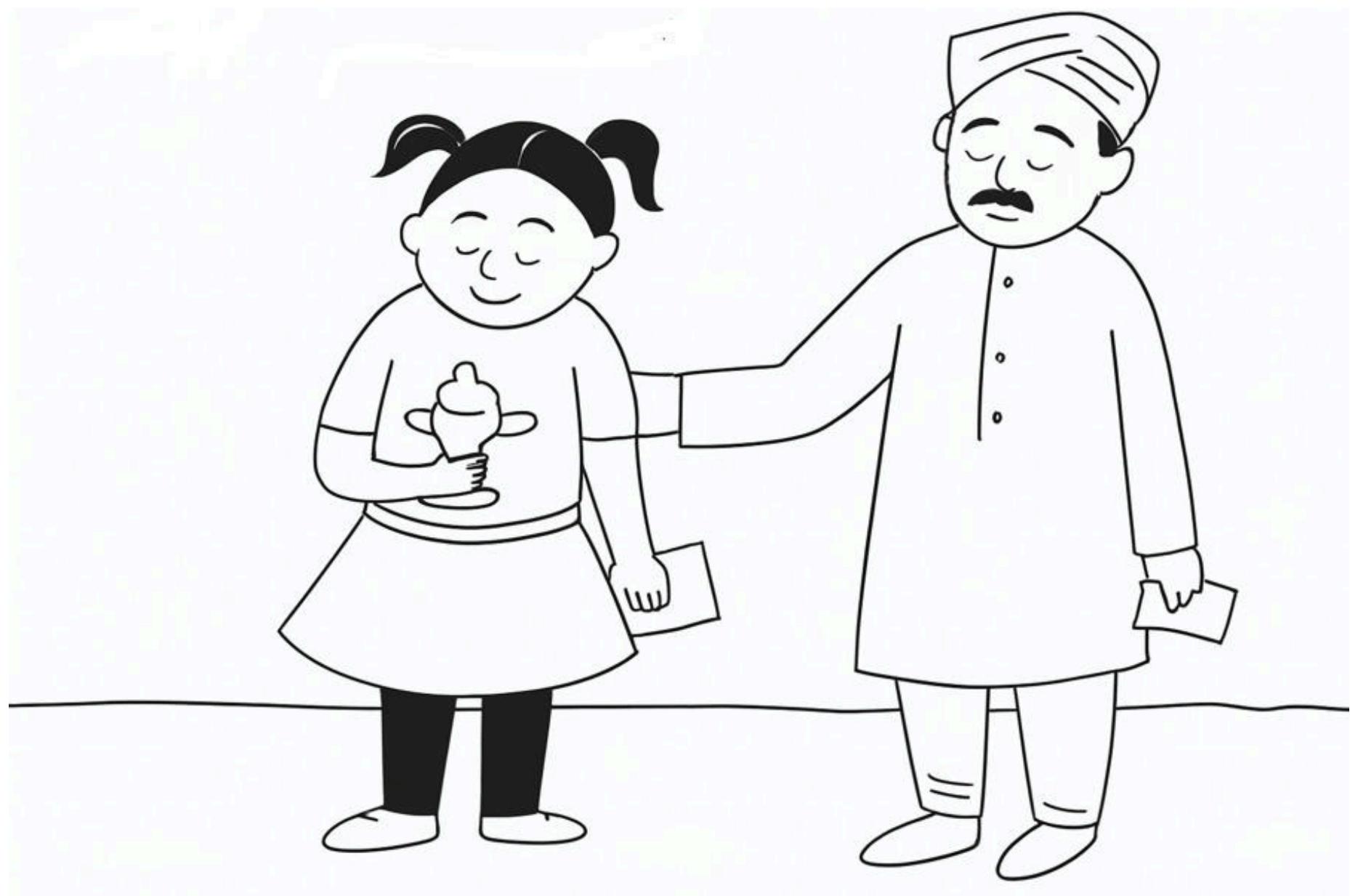
हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है इस कहानी में हमें बाल विवाह के बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सके। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।



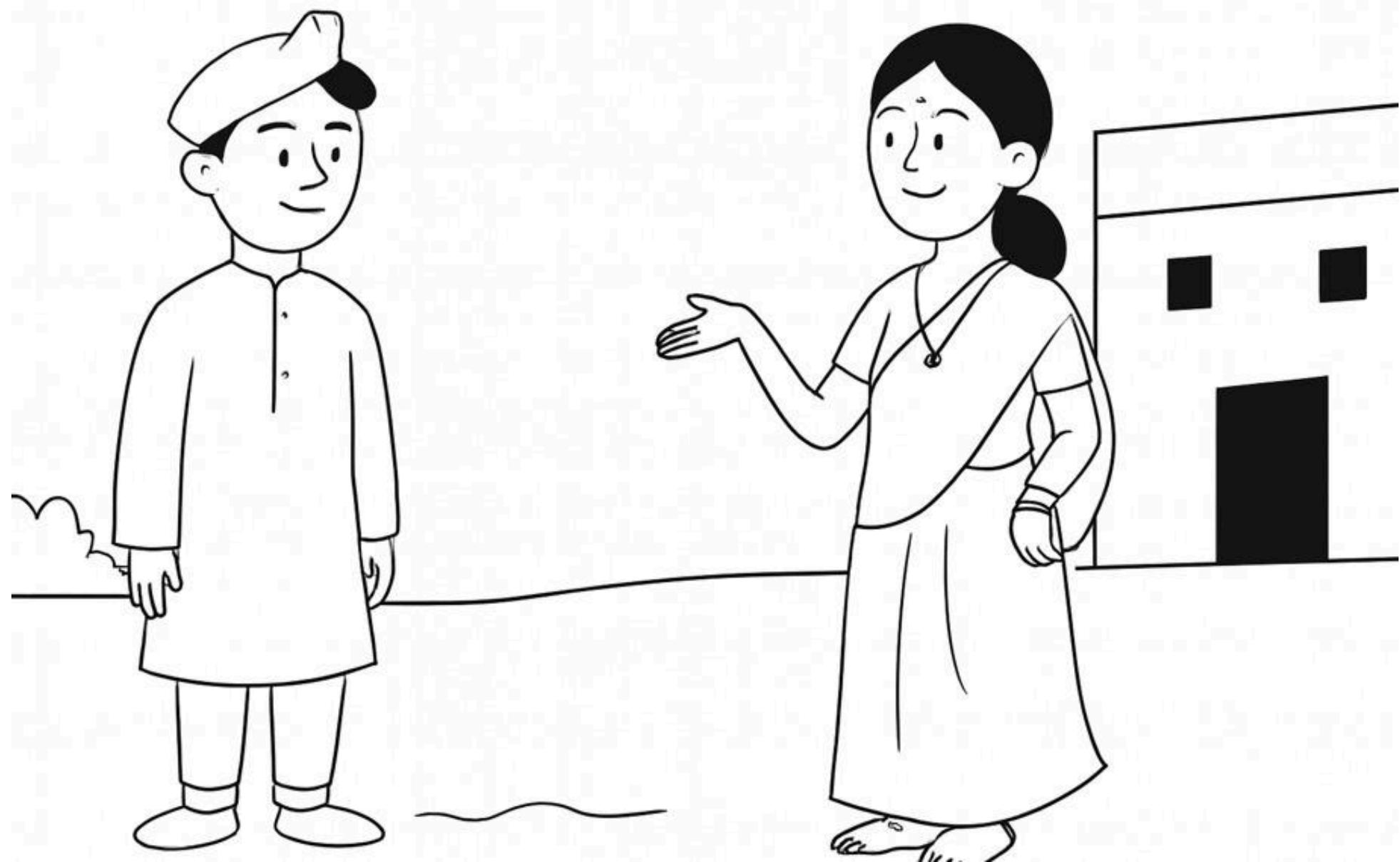
एक गाऊँ दी रेखा नौउँ री एक  
लड़की रायै थी। सै पौड़ने दी बौरी  
तेज़ थी तिंरौ पापा डोखरौऊँ दी काम  
कौरै थौ।



ਜੌ ਰੇਖਾ ਦਸ਼ ਸਾਲ ਰੀ ਊਝ ਤੈ ਤਿੰਗੈ  
ਪਾਪਾਇ ਆਪੜੀ ਬੇਟੀ ਰੀ ਸ਼ਾਦੀ ਰਮੇਸ਼  
ਨੌਤੁੰ ਰੈ ਮਾਣਛੈ ਰੈ ਸਾਥੈ ਕੀ ।



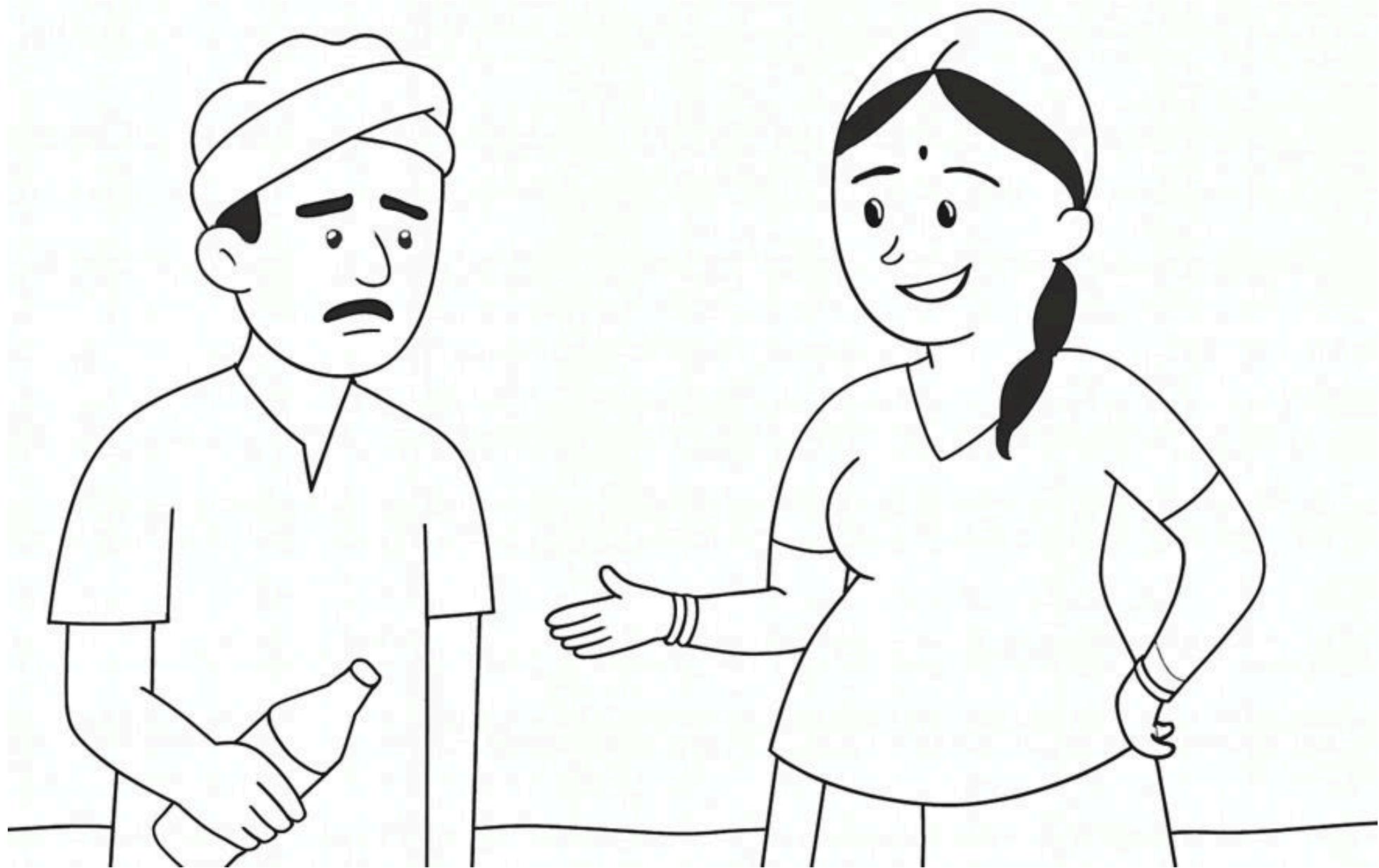
ਪਰ ਸੈ ਸ਼ਾਦੀ ਬਾਸਿਧੈ ਕੀ ਆਪਡੇਈ  
ਮਾਈਚੇ ਦੀ ਥੀ, ਰੇਖਾਇ ਖੁਕ ਪੈਡਾਇ  
ਕੀ ਔਜ਼ਿ ਆਪਡੇ ਪੁਰੈ ਗਾਊਂ ਦੀ ਦਸ਼ੁਡ  
ਦੀ ਸਾਰਿਤੁੰ ਕੌਇ ਫੌਸਟ ਆਈ ।



जौ रेखा औठारा साल री ऊँड़, तै  
रमेश रेखाइ आपड़े गौरे गिण्डे तिउँरे  
गौरे आओ, तैबै रेखा तेसरे साथे  
तेसरे गौरे डेड़ ।



तेसरे साथै डेइयौ कुछ दूस बासियै  
रेखा के पौतौ लागौ की रमेश अनपड़  
औजि बौरी सूर बी पियै ।



एड़ी बौज़े कौइ रेखा बौरी परेशान  
ऊइ। आज़ि तेस बौरी सौमज़ान्दि  
लागी कि सूर ना पिऊ, पर सेउ तिंरी  
बुशै ना शुणै थो।



एज़ी बौज़ै कौइ रेखा बौरी दुखी रैयै  
थी, सै सेज़ौ बौकते दि गौरकेड़ी  
थी कुछु साल बासियै रेखा री एक  
बेटी ऊइ, तैबै की तिणी सूर पिणी  
ना ढोड़ी ।



जौ तिंरी बेटी हुइ साल री ऊइ तैबै सै  
आपड़ी बेटी गिणियौ आपड़ माईचै  
डेइ, तेत्कै तिरै आमा पापाइ सै बौरी  
दुखी देखी ।



तैबै रेखा रै आमा पापाइ पुछ्हौ कि का  
उवौ तू दुखी केलाइ? तैबै तियै रमेश  
री सारी बुशै आपडै आमा पापा आरी  
बोली देइ, तिंरी बुशै शुणियौ तिरै  
आमा पापा बी बौरी दुखी उवै।



औज़ि तिरै आमा पापा तिंरी शादी  
कौरियौ बौरी पौछतायै कि आमुं  
आपड़ी बेटी री शादी एती छोटी  
ऊमर दी केलाइ की। एज़ी बौजै कौइ  
तिंरी ज़िन्दगी खराब ऊइ।

## For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.



यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्द कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,, धन्यवाद ,,,,,,,

